AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

cgj iBkj e 0;kolkf;d lajpuk çfr:i dk vè;;u

ORIGINAL ARTICLE

Author
M,- ';kecrh lkMhy]
सहायक प्राध्यापक,
स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय,
नवापारा ,जिला–रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

'kks/k lkj

व्यावसायिक संरचना किसी भी क्षेत्र के आर्थिक प्रगति अथवा विपन्नता का सही प्रतिनिधित्व करती है। जनसंख्या की जितनी अधिक भागीदारी होगी उस देश का आर्थिक विकास उतना ही अधिक समुन्नत होगा। किसी भी क्षेत्र की मानव शक्ति का वह भाग जो आर्थिक रूप से लाभकारी क्रियाओं में संलग्न है, श्रम शक्ति कहलाता है। श्रम शक्ति संघटन, लिंग, आयु, जाति एवं आवास द्वारा परिवर्तनशील होती है (चांदना, 1967)। ग्रामीण क्षेत्रों में नगरीय क्षेत्रों की तुलना में कार्य विभेदन कम होता है, वही दोनों क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था की प्रकृति एवं सामाजिक जीवन में अत्यधिक अन्तर होता है। अध्ययन क्षेत्र में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, कि व्यावसायिक संरचना को उत्तम एवं सुदृड बनाने हेतु अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख तत्व, जैसे–कृषि प्रधान, उद्योग प्रधान, अर्द्वउद्योग प्रधान एवं अन्य कार्योत्पादन में जनसंख्या के आय संरचनाः– क्रय शक्ति सामाजिक–आर्थिक स्तर, आर्थिक संगठन आर्थिक समस्याओं के निर्धारण एवं रूपान्तरण हेतु आर्थिक योजना के निर्माण में योगदान आधार सिद्व होता है।

e[; 'kCn

0;kolkf;d lajpuk] 0;olk;] —"kd] [kfrgj etnj] ikfjokfjd m|kxA

çLrkouk

व्यावसायिक संरचना किसी भी क्षेत्र के आर्थिक सम्पन्नता अथवा विपन्नता का सही प्रतिनिधित्व करती है। मानव द्वारा जीवकोपार्जन के लिए किये जाने वाले आर्थिक क्रिया–कलाप को व्यवसाय कहते है। मानव संसाधन में आर्थिक क्रियाओं की संरचना व्यावसायिक संरचना कहलाती है। व्यावसायिक संरचना से एक तरफ जहाँ क्षेत्र के आर्थिक विकास स्तर की जानकारी प्राप्त होती है जिससे ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान, उद्योग प्रधान या अर्द्व उद्योग प्रधान है। वही दूसरी ओर वहाँ निवास करने वाली जनसंख्या के आय संरचना क्रय शक्ति, रहन–सहन का स्तर आर्थिक संतुलन निर्धारण, आर्थिक समस्याओं के निर्धारण एवं आर्थिक रूपान्तरण हेतु आर्थिक योजना के निर्माण में आधार सिद्व होता है।

किसी भी देश की जनसंख्या में जनसंख्या का वह भाग, जो मानसिक और शारीरिक रूप से किसी भी आर्थिक उत्पादन कार्य तथा सेवाओं में योगदान दे सके, यदि उसके श्रम की माँग है और वह आर्थिक क्रिया–कलापों में भाग लेने का इच्छुक है, कार्मिक जनसंख्या कहलाती है। एक विकसित राष्ट्र या क्षेत्र के अर्थ तन्त्र हेतु यह आवश्यक है, कि विभिन्न व्यवसायों के मध्य जनसंख्या के वितरण में संतुलन हो।

vè; ;u dk mís’;

कार्मिक जनसंख्या का किसी भी क्षेत्र के व्यावसायिक संरचना में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यावसायिक संरचना का सभी पहलुओं पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है। यह उन सभी तथ्यों से अवगत कराता है, जो अध्ययन क्षेत्र के विकास के लिए सहायक सिद्व होता है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में धनोपार्जन के उद्देश्य से कार्य करने वाले कार्यशील जनसंख्या पूर्णकालिक कृषक, कृषक मजदूर, पशुपालन, मत्स्य पालन, खनिजोत्पादक, पारिवारिक उद्योग, कृषि प्रधान उद्योग, विनिर्माण उद्योग, वाणिज्य–व्यापार संचार एवं परिवहन के साधनों का समुचित प्रयोग कर सामाजिक, आर्थिक विकास शांति सुरक्षा एवं अन्य सामाजिक समरता का संतुलन स्थापित हो सके।

vè; ;u {k=

बैहर पठार मध्यप्रदेश राज्य के दक्षिण में बालाघाट जिले में 21033′ से 220240′ उत्तरी अंक्षाश तथा 80014′ से 8103′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित हैं। बैहर पठार सतपुड़ा मैकल श्रेणी का एक भाग है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1,750 मीटर है। यहाँ का जनसंख्या 3,37,182 (2011) है जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 2,82,386 और शहरी जनसंख्या 54,796 है। इसमें 1,66,254 पुरूष तथा 1,70,928 महिला शामिल है।

बैहर पठार के उत्तर में मण्डला जिला, दक्षिण में बालाघाट जिले की लांजी एवं किरनापुर तहसील, पूर्व में छत्तीसगढ़ राज्य का राजनांदगाँव एवं कबीरधाम जिला तथा पश्चिम में बालाघाट तहसील स्थित है। प्राकृतिक दृष्टि से बैहर पठार सामान्य ऊँचाई पर पर्वतों तथा निचली पर्वत श्रेणियों के साथ एक समतल या साधारण उच्च भूमि हैं यह आग्नेय चट्टानों, पटिताशमों स्तरित चट्टानों तथा निचली बलुआ पत्थरों से बना हैं।

fofèkr= ,o fo’y"k.k

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। व्यावसायिक संरचना में कार्यशील जनसंख्या को आधार मानकर सम्पूर्ण व्यावसायिक जनसंख्या को 5 श्रेणियों में रखा गया हैः

(1) कृषक

(2) खेतिहर मजदूर

(3) पारिवारिक उद्योग

(4) अन्य कार्यशील

(5) मुख्य रूप से कार्यशील

lkj.kh Øekd 01½ बैहर पठारः व्यावसायिक संरचना, 2011

क्र.	कार्यशील	पुरूष		महिला		कुल जनसंख्या	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	कृषक	49944	19.8	25908	10.3	75852	30.05
2	खेतिहर मजदूर	16219	6.4	14797	5.9	31016	12.09
3	पारिवारिक उद्योग	11429	4.5	1794	0.7	13223	5.24
4	अन्य कार्यशील	4769	1.9	1300	0.5	6069	2.4
5	मुख्य रूप से कार्य शील	82361	32.9	43884	17.4	126245	50.02
योग		**1,64,722**	**65.2**	**87,683**	**34.8**	**2,54,405**	**100.00**

(स्त्रोतः जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, 2011)

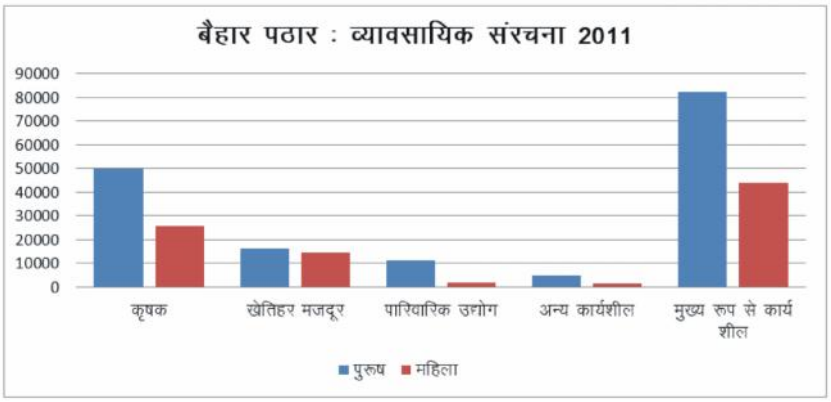

—"kd

कृषक वह व्यक्ति है, जो निजी भूमि अथवा लगान पर ली गयी भूमि पर कृषि कार्य करता है। कृषक यह निश्चित करता है कि किस भूमि पर कब तथा कैसे कृषि कार्य किया जाए। वह अपनी कृषि की पूरी तरह देखभाल करता है। यह वह व्यक्ति होता हैं, जो कृषि कार्य का जोखिम उठाता है एवं कृषि से प्राप्त आय का भागीदार होता है। बैहर पठार में कुल कार्यशील जनसंख्या में 19.8 प्रतिशत पुरूष 10.3 प्रतिशत महिलाएँ कृषि कार्यो में संलग्न है।

[kfrgj —"kd etnj

खेतिहर कृषक मजदूर कार्यशील जनसंख्या का वह भाग है, जो कृषकों के यहाँ मजदूर के रूप में कार्य करता है एवं बदले में अन्न तथा रूपयों में मजदूरी प्राप्त करता है। ये कृषि आश्रित जनसंख्या की श्रेणी में आते है, कृषक श्रमिक को कृषि में लाभ या हानि की कोई चिन्ता नहीं रहती है। बैहर पठार में कुल कार्यशील जनसंख्या का 6.4 प्रतिशत पुरूष तथा 5.9 प्रतिशत महिलाएँ खेतिहर मजदूर (कृषक मजदूर) है।

ikfjokfjd m|kx

बैहर पठार में उद्योग–धन्धों का बहुत कम विकास हो पाया है, जो यहाँ की निर्धनता एवं कम आय का मुख्य कारण है। पठार में कुल कार्यशील जनसंख्या का 4.5 प्रतिशत पुरूष तथा 0.7 प्रतिशत महिलाएँ पारिवारिक उद्योग में संलग्न है।

vU; dk;Z'khy

इसके अर्न्तगत शिक्षण, स्वास्थ्य, प्रशासनिक एवं विविध सेवाओं में संलग्न कर्म को अन्य कर्मकार में सम्मिलित किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरीय क्षेत्रों में अन्य सेवाओं में संलग्न जनसंख्या अधिक है जिसका मुख्य कारण यह है कि स्वास्थ्य, शिक्षण तथा प्रशासनिक सुविधाएँ अधिकतर नगरीय क्षेत्रों में हि केन्द्रित होती हैं जिसके फलस्वरूप अन्य सेवाओं में संलग्न कर्मकारों का संकेन्द्रण नगरीय क्षेत्रों में सर्वाधिक होता है। बैहर पठार के कुल कार्यशील जनसंख्या का 1.9 प्रतिशत पुरूष तथा 0.5 प्रतिशत महिलाएँ अन्य कार्यो में संलग्न है।

e[; :i ls dk;Z'khy

धनोंपार्जन के उद्देश्य से शारीरिक मानसिक, बौद्विक एवं तकनीकी कार्य करने वाली जनसंख्या कार्यशील जनसंख्या कहलाती है। कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत पूर्णकालिक कृषक, कृषक मजदूर, पशुपालन, मत्स्य पालन, पुष्पोत्पादक, फलोत्पादक, खनिजोत्पादक, पारिवारिक उद्योग विनिर्माण कार्य वाणिज्य एवं व्यापार, संचार एवं परिवहन, शांति–सुरक्षा व अन्य सामाजिक सेवाओं में कार्यरत् जनसंख्या आती है। बैहर पठार के कुल कार्यशील जनसंख्या का 32.2 प्रतिशत पुरूष तथा 17.4 प्रतिशत महिलाएँ मुख्य रूप से कार्यशील है।

fu"d"k

व्यावसायिक संरचना की विविधता में अध्ययन क्षेत्र में निम्न आय और निर्धनता की अधिकता ने बहुत सी

सामाजिक, आर्थिक समस्याओं को सृजित किया है जिसके परिणाम स्वरूप एक ओर यह क्षेत्र के आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न कर रही है, वही दूसरी ओर यह निम्न आय, निम्न जीवन स्तर, गरीबी के लिए पूर्णरूप से जिम्मेदार है।

lanHkZ lwph

1. लाल हीरा, (1986) जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन दाऊदपुर, गोरखपुर।
2. Uttat Pradesh Geographical Journal ,2020 Volume 25.
3. तिवारी, आर. के (2015) जनसंख्या भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
4. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, वर्ष 2011

——==00==——